62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 645 Participant Code: 113

हमारी संस्कृति और खेती

भारतीय संस्कृति और खेती एक विशेश चर्चा विषय है। सब लोग अपने-अपने संस्कृति का आदर करनेवाले हैं। भारत के संस्कृति और खेती दुनिया में बहुत प्रसिद्ध है। भारत के संस्कृति के बारे में सबको मालूँ है। मेहमानों को आदर करने वाले और मेहमानों को ईश्वर की तरह संभालनेवाले हैं, भारतीय जनता। जब हम दूसरों को आदर करें और उनके साथ अच्छे से बातें करे, तब हमें आदर वापस मिलती है।

पुराने ज़माने के लोगों अपनी संस्कृति का उचित उदाहरण है। वो लोग खेत में काम करने वाले थे। उनके मुख्य उपजीवन मार्ग खेती था। जब एक बच्चा का जन्म होता है, उस समय से उसके परिवार उसे एक अच्छे इनसान बनवाने का कोशिश शुरू करते हैं। अगर उस परिवार के लोग अच्छे संस्कृति से जीने वाले हैं तो, उस बच्चे भी ज़रूर

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

एक ऐसा अच्छा इनसान होंगे। इससे हम समझ सकते है कि, अपने संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में को देते जा रही है। जब हम अच्छे संस्कृति से जी रहे है, तब ही अपने नाम समूह में अच्छे हो जाएगे। इतिहासों बताते है कि भारत की संस्कृति सिंधु नदी के पास में जन्म हो चुका है। आदिम मानव जानवरों को के शरीर खाते थे। इससे बहुत सालों बाद से मानव अपनी खाना आँग से पकाने के बाद खाना शुरू किया। फिर उन्होंने समझ लिया की खेती करने से भी भोजन मिलते है। इसलिए वो लोग एक जगह में घर बनाकर व वहाँ जीने का तय करदिया।

ऐसे अपने संस्कृति की शुरूवात हुई। पुराने ज़माने का लोग अपने- अपने चीज़े एक दूसरे को देते थे, दूसरे को मदद करते थे, दूसरों के मुसीबतों के समय में उनके साथ होते थे। ये सब अपने संस्कृति का विशेशताएँ थे।

आदिम मनुष्य ऐसे एक संस्कृति को बनाया था। लेकिन आज के ज़माने को नई पीढ़ी ये सब को भारतीय कोई मूल्य नही देते हैं। अपने अच्छे संस्कृति के दुशमनों हैं, मल, द्वेश, अहंकार आदि। युव पीढ़ी अपने महत्वपूर्ण संस्कृति को दूर रखकर, बुराई को अपना करते हैं। यही तरह हम खेती को भी छोड़ देते हैं। खेती हमारे संस्कृति का निशाना है। खेत-मजूरी करने वाले हमारी बूढ़े लोगों को बहुत शारीरिक शक्ति और खुशी भी मिलते थे।

आज के नई पीढ़ी पूरा समय मोबैल में खेलते-खेलते बिताने वाले हैं। नई संस्कृति में प्यार, करुणा आदि मूल्यों नही हैं। नई संस्कृति का निशान अब मोबैल फोण हो गया है। सब लोग - बड़े, बच्चें या बूढ़े लोग हो, सब अपने घर की कमरे में दरवाज़ा बंद कर, चार दीवारों के अंदर जी रहा हैं। ऐसे लोगों को सिर्फ

अपने खुशी के बारें में जानना है। वो लोगों को संस्कृति या माता-पिता, अपने पर्यावरण की सुन्दरता, मानव मूल्य, और दूसरों की खुशी, कुछ भी नही जानना है। सयन्स में बताते है कि हमें सिर्भ जीने केलिए सिर्भ पानी-वायु की जरूरत है। लेकिन अब वो बदल चुका है। पानी-वायु से भी बडिया चीज अब मोबैल है। अपने संस्कृति के बारें मे भूलकर, मोबैल नामक संस्कृति को अब लोग बना रहे है।

आज के समाज में अपने खेती के हालत भी अच्छे नही है। भारत में खेती करनेवाले लोगों अब कम हो रहा है। अपनी संस्कृति को भूलने का अच्छे उदाहरण है यह। केरल में भी अब खेतो में काम करनेकेलिए लोगों को नही मिलता है। कुछ सालों पहले देखते है तो पता हो जाएगी की एक परिवार के सभी लोग खेतों में

काम करने केलिए जाते थे। उस समय के मुख्य काम खेती था। लेकिन आज, सब खूब पैसा मिलनेवाले दूसरे काम करने केलिए किसी दूसरे देश पर जाते हैं। लोगों मज़े में बोलते है "केरल में चूल्हा जलाने केलिए तमिलनाडु और करनाटका से चावल लाने की ज़रूरत है"।

बाज़ार में मिलने वाले सब्ज़ि और फलों में बहुत केमिकल्स है। ये सब हम खा रहे हैं। ऐसे खाना हमारे सेहत केलिए अच्छा नही है। इससे हमारे बुरे हालत हो जाएगी। लेकिन, हम देखें तो पता हो जाएगे कि अपने बूढ़े लोगों अभी भि अच्छे सेहत के साथ जी रहे है। ये खेती मे काम करने से मिली है और खेत में बनाए हुए खाना खाने से है। खाना ये हमारे खेती का महत्व बताने वाले बात है। हमारे जीवन में हम अपनी संस्कृति न भूलना है।

"अगर हमें बड़े काम है, बड़े घर या गाड़ी है, हमें खूब पैसा है, तो हमें और क्या चाहिए" - ये सोच को हमें छोड़ना है। पैसा से बढ़िया कुछ है - वो खुशी है। कितनी ऊँचाई में भी हो, लेकिन अपने संस्कृति का नही भूलना है। हम मूल्य नहीं देनेवाले कई चीज़ों के ज़रूरत जीवन में हमें ज़रूर हो जाएगा। युव पीढ़ी अपने 'संस्कृति और खेती' को ऐसे कोई महत्व, या मूल्य नही देते हैं। लेकिन वो ज़रूर एक दिन काम में हो जाएगी।

एक जनता में उनके संस्कृति और खेती को बहुत खास महत्व है। वही है उस जनता के व्यक्तित्व। सालों पहले बनाए हुए थे, अपनी संस्कृति। कई तरह के गानों से, चित्रों से, अपनी संस्कृति दूसरों के साथ पहुँचता है। एक जगह की

संस्कृति सालों पुराने जन्म हुए थे। लेकिन वो उस जगह के व्यवहार से, मन में बैठा लोगों के मन में पैदा हुई थी।

खेतों में काम करने केलिए अब हमें बंगाल से लोगों को बुलाते है। ये ठीक नही है। अपनी संस्कृति और खेती का संरक्षण अपना दायित्व है। उसे अच्छी तरह निभाना भी हमारा काम है। सालों पुराने वाले अपने संस्कृति से ही सब शुरू हुआ था। आज हम देखनेवाले सब उससे ही शुरू हुई थी। इसलिए अपने संस्कृति को न छोडो। अपने संस्कृति के निशाना कहनेवाले खेती को भी न भूलो, अपने भारत को अपने खेती के नाम में प्रसिद्ध करवाना अपना काम है। मिलकर अपनी खेती को वापस बुलाएँ।